RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक37-38 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 27 फरवरी 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000रु. (संयुक्तांक)

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती, स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय, स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com Website- www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल, मंगल सिंह मर्तोलिया

रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट का सम्बोधन

कथाकार-पत्रकार स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती का दसवां स्मृति समारोह

हमारे जल-जंगल-जमीन के दावेदार कौन बन रहे हैं समझना चाहिये

श्रीमान रंजीत सिंह रावत का सम्मान

श्रीमान फल सिंह बोनाल का सम्मान

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। कथाकार-पत्रकार व पिघलता हिमालय के संस्थापक सम्पादक रहे स्व. आनन्द बल्लभ उप्रेती का दसवां स्मृति समारोह 'लला जसुली बूढ़ी शौक्याणी और हिमालय के विविध आयाम' विषय पर केन्द्रित सेमिनार के रूप में सम्पन्न हुआ। हिमालय संगीत शोध समिति एवं एमबीपीजी कालेज के इतिहास विभाग द्वारा आयोजित मोतीराम बाबूराम राजकीय महाविद्यालय के लाल बहादुर शास्त्री सभागार में हुए समारोह में शिक्षा, संगीत, कला, प्रशासन, पत्रकारिता के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान देने वाले दर्जनभर महानुभावों को 'आनन्दश्री' सम्मान से सम्मानित किया गया। साथ ही युवा साधकों व शोधार्थियों को सम्मानित करते हुए उत्साहित किया गया। इस अवसर पर आधार वक्ता सहित शोधपत्र प्रस्तुत करने वालों ने एक सिरे से कहा कि हिमालयी संस्कृति विश्व का मुकुट है और देवभूमि उत्तराखण्ड से जितना सन्देश दुनिया को जा सकता है वह अभी तक नहीं पहुंच पा रहा है। इसके पीछे मुख्य कारण है हमारे जल, जंगल, जमीन के दावेदार कौन बन रहे हैं समझना चाहिये।

मुख्य अतिथि रक्षा राज्यमंत्री अजय भट्ट ने वरिष्ठ पत्रकार व कथाकार स्व.आनन्द बल्लभ के व्यक्तित्व कृतित्व पर कहा किदेश के वरिष्ठ पत्रकार-साहित्यकारों में शुमार उप्रेती केन्द्र सरकार का राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, राज्य सरकार का सारस्वत साधना सम्मान सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित थे। उनकी सहजता और दिये गये योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता है। उन्होंने दानवीरांगना जसुली बूढ़ी शौक्याणी का स्मरण करते हुए कहा कि लला जसुली ने अपने समय में कुमाऊँ कमिश्नर रैमजे के सहयोग से कैलास यात्रा पथ पर 400 से अधिक धर्मशालाओं का निर्माण करवाया। इस दानवीर द्वारा नेपाल और तिब्बत तक बनवाई गई धर्मशालाओं के अवशेष धरोहर के रूप में हैं। दारमा घाटी की जसुली अमा ने अपने जीवन में जिन वसूलों को निभाया उस परम्परा को उनके बंशज बनाए हुए हैं। आज जरूरत उन विरासतों को संरक्षित करने की है। मुक्तेश पन्त ने अपने मित्र स्व.उप्रेती का स्मरण करते हुए बताया दिल्ली प्रेस से अपनी शुरुआत की। सन् 1978 में पिघलता हिमालय समाचार पत्र को शुरु किया जो इतिहास है। समारोह में उच्चशिक्षा निदेशक प्रो.जगदीश प्रसाद, प्राचार्य एमबीपीजी प्रो.एन. एस.बनकोटी, प्राचार्य रा.डिग्री कालेज टनकपुर प्रो.नगेन्द्र द्विवेदी ने भी विचार रखे। प्रो.सी.एस. नेगी ने स्लाइड शो के द्वारा सीमान्त की घाटियों का वृत्तचित्र प्रस्तुत किया। प्रो.पीसी बाराकोटी की अध्यक्षता व विपिन चन्द्र पाण्डे के संचालन में हुए समारोह में हिमालय संगीत शोध समिति के कलाकारों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर पिघलता हिमालय के संरक्षक फली सिंह दताल, संयोजक डॉ.एच.एस.भाकुनी, डॉ. पंकज उप्रेती, प्रो. विपिन उप्रेती, डॉ. प्रयाग जोशी, प्रो.जी.सी.पन्त, प्रो.दीपा गोबाड़ी, प्रो. कैलाश चन्द्र कलोनी, दुर्गा सिंह बोथियाल, देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू, श्रीरामसिंह धर्मशक्तू, गंगा सिंह मर्तोलिया, गणेश प्रताप सिंह, प्रेम सिंह जंगपांगी, डॉ.गोकुल सत्याल, डॉ.सुरेश टम्टा, डॉ.शिव सिद्ध, डॉ.भुवन तिवारी, श्रीमती गीता उप्रेती, श्रीमती अमृता पाण्डे उपस्थित थे।

'आनन्दश्री' सम्मान से सम्मानित होने वाले-

इस बार जिन महानुभाव को 'आनन्दश्री' सम्मान दिया गया उनमें हैं- शिक्षाविद् प्रो.एन.एस.बनकोटी प्राचार्य एमबीपी जी कालेज हल्द्वानी, रंजीत सिंह रावत वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी देहरादून, रंगकर्मी डबला सिंह फिरमाल, लोक गायक कमलजीत सिंह ढकरियाल, इंजी.फल सिंह बोनाल, समाजसेवी कर्ण सिंह गुंज्याल, नवीन गर्ब्याल, श्रीमती ईश्वरी ग्वाल रोंकली, पत्रकार श्री गणेश पाठक, श्री नवीन बगौली, श्री सुरेन्द्र नेगी, श्री हरीश पाण्डे।

परम्परागत वेशभूषा आकर्षण का केन्द्र

आयोजन के दौरान सीमान्त क्षेत्र के रं व शौका वेशभूषा का आकर्षण सबको मोहित करने वाला था। सीमान्त की दारमा, चौंदास, व्यास, जोहार घाटी में पहने जाने वाले वस्त्राभूषणों में सजे महिला पुरुष उपस्थित रहे।

मेधावियों के लिये प्रोत्साहन राशि प्रदान की

जसुली अमा के कुटुम्बी जनों ने दानवीरांगना जसुली बूढ़ी शौक्याणी बालिका इण्टर कालेज धारचूला की मेधावी छात्राओं के लिये प्रोत्साहन राशि प्रदान की। वर्ष 2020-21 में कक्षा 6, 7, 8 में सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रा प्रियंका धामी पुत्री श्री करन धामी पता ग्राम रौंथी को तीन हजार रुपये, कक्षा 9 व 11 में सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रा गंगोत्री धामी पुत्री श्री मान सिंह धामी पता ग्राम रौंथी को सात हजार रुपये की राशि प्रदान की वर्ष 2021-22 के लिये सात छात्रों को डेढ़-डेढ़ हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की। इनमें कविता सामन्त, दीपा रावल, दीपा रावल, संगीता बुदियाल, दीपिका रौतेला, प्रियंका धामी, भूमिका दानू,प्रियंका रौतेला हैं।

पर्वतीय उत्पादों व पुस्तकों की प्रदर्शनी भी

समारोह स्थल पर मुनस्यारी हाउस द्वारा पर्वतीय उत्पादों व पुस्तकों की प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। इसमें जड़ीबूटी, ऊनी वस्त्र, काष्टकला, चवर गाय की पूंछ, पोस्टर-फोटो के साथ ही उत्तराखण्ड की कला-संस्कृति- इतिहास भूगोल से सम्बन्धित पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई गई थी।

रं बोली के गीत के साथ दुदबोली का सन्देश दिया

मंचीय प्रस्तुतियों में पुष्पा दुग्ताल व साथियों ने रं बोली में दानबीरांगना जसुली बूढ़ी शौक्याणी की महिमा सहित कई गीत प्रस्तुत किये और अपनी दुदबोली को बचाने का सन्देश दिया। उन्होंने का कि रं कल्याण संगठन के संरक्षण नृपसिंह नपलच्याल इस दिशा में बराबर प्रोत्साहित कर रहे हैं और कार्य भी हो रहा है।

श्रीनिवास मिश्र की रचनाओं का गायन

इस बार के आयोजन में शिक्षाविद् श्रीनिवास मिश्र की रचनाओं का गायन विशेष रूप से किया गया। हिमालय संगीत शोध समिति के कलाकारों ने आचार्य धीरज उप्रेती के निर्देशन में सरस्वती वन्दना, स्वागत गीत, बसन्त गीत व भजन की राग-तालबद्ध कर्ण प्रिय प्रस्तुति दी। उल्लेखनीय है कि श्रीनिवास मिश्र की पिघलता हिमालय प्रकाशन से हाल ही में 'वीर भोग्या बसुन्धरा' पुस्तक प्रकाशित हुई है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

बेरोजगार युवाओं की पीड़ा और राजनीतिक घेराबन्दी

हमारा वर्तमान बेरोजगार युवाओं की पीड़ा का सरोवर बन चुका है। हर गली मोहल्ले में बेरोजगारी से त्रस्त युवा दिखाई दे रहे हैं। ऊपर से इनकी राजनीतिक घेराबन्दी का खेल बदस्तूर जारी है। जो हालातों को और भी ज्यादा भयावह बनाने वाला है।

उत्तराखण्ड प्रदेश का ही उदाहरण देख लें, जिस प्रकार से बेरोजगारों की भीड़ बढ़ती जा रही है और घपलेबाजी के मामले उजागर हुए हैं उससे पता चलता है कि हमारी दशा और दिशा कितनी उलट होती जा रही है। अपने परम्परागत उद्योग-धन्धों से विमुख युवा पीढ़ी नया करने की सोच रही है जबकि इस प्रतिस्पर्द्धा में हर कोई कामयाब नहीं हो सकता। दूसरी बात, सरकारी नौकरी के लिये लालायित लोग किसी भी पद में जाने को तैयार हैं, इसमें भी सभी को अवसर नहीं मिल सकता है। तीसरा, मिलीभगत करने वालों ने ईमानदार-गरीब युवाओं को नुकसान पहुँचाया है। अब जबकि पेपर लीक, मनमर्जी भर्तियों, गड़बड़झालों का हंगामा मचा युवा खुलकर सड़कों पर उतर आए। ऐसा ही बड़ा आन्दोलन पटवारी/लेखपाल परीक्षा से पहले देहरादून की सड़कों पर हुआ। सरकार भले ही कुछ कहती रहे और नकल विरोध सख्त कानून भी बन चुका है लेकिन यह सच्चाई है कि अभी भी कई बड़े घपलेबाजों को सजा मिलनी बांकी है।

आन्दोलन के कारण बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों ने पेपर भी नहीं दिया और विपक्ष आन्दोलनकारियों के पक्ष में हवा देने लगा। दूसरी और मुख्यमंत्री ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा कि हम युवाओं के सपनों और आकांक्षाओं के साथ कोई समझौता नहीं करेंगे। जो कोई भी परीक्षा में गड़बड़ी करेगा उसे उम्रकैद और दस साल की सजा दिलाई जाएगी। सम्पत्ति भी जब्त कर ली जाएगी।

असल बात पर आइए, पक्ष-विपक्ष कितने ईमानदार हैं सबको पता है। सब जानते हैं कि जब जिसको अवसर मिला उस सरकार ने, उसके मंत्री नेताओं ने अपनों को लाभ पहुँचाने के लिये मनमर्जी की। इस भण्डाफोड़ हो चुका है। इसके अलावा शासन में जिन लोगों को काम सौंपा गया वह बिकने बिकाने पर लग गये इसका भी पर्दाफाश हुआ है। ऐसे में सीधा सा रास्ता है कि जो पकड़ में आ चुके उन्हें दण्ड के अलावा आगे के लिये न्यायप्रिय कार्य हो। युवाओं की घेराबन्दी कर उन्हें भटकाया न जाए।

पिघलता हिमालय के स्वामित्व के सम्बन्ध में

फार्म 4

(नियम 8 देखिये)

1. प्रकाशन स्थल	:	शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड
2. प्रकाशन अवधि	:	साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	:	गीता उप्रेती
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
पता	:	शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी
4. प्रकाशक का नाम	:	गीता उप्रेती
पता	:	पिघलता हिमालय, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
5. सम्पादक का नाम	:	गीता उप्रेती
(क्या भारतीय नागरिक है?)	:	भारतीय
यदि विदेश है तो मूल देश	:	
पता	:	पिघलता हिमालय, जे.के.पुरम्, सेक्टर-डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)
6. उक्त व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों, तथा जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	

मैं श्रीमती गीता उप्रेती एतद् द्वारा यह घोषणा करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक- 28.2.2023 ह0/श्रीमती गीता उप्रेती

प्रकाशक के हस्ताक्षर

फसक

दाज्यू, लाल-गुलाल तो होली से पहले भी ठैरा

फरवरी तो फरफराट में ही कट जाती है बल

दाज्यू, कलयुग में सबकुछ झल्लेदार हो रहा ठैरा। होली तो कहने को है, लाल-गुलाल तो होली से पहले भी ठैरा। चुनाव जीतने वाला उम्मीदवार हो या जेल से रिहा होने वाला धुरन्धर, कारोबार की बिल्डिंग बनाने वाला लाला हो या छुट्भैया, खूब रंग उड़ाते दिखाई देते हैं। अपना गोलू भी जिस दिन छात्र संघ का चुनाव जीता था, उसने खूब होली खेली। रंग पतोड़ते हुए खूब फतोड़ा-फतोड़ हुई। आधा साल बीतने के बाद छात्र संघ चुनाव हुए। वह भी जरूरी ठैरे। फरवरी तो फरफराट में ही कट जाती है बल।

सोमेश्वर में एक बालिका ने पुलिस को बताया कि 63 साल का बुजुर्ग चार साल से उसके साथ दुष्कर्म कर रहा है। सयाना आदमी ठैरा, पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। तराई में किसान मटर का समर्थन मूल्य न मिलने पर गुस्से में हैं। दाज्यू, और ही और हो रही है कहा चारों ओर। अमृत वर्ष में अभी बहुत कुछ होने वाला है बल। शिवरात्रि के दिन से ही हमारा लबलू भक्त बनकर धुंआ उड़ा रहा था, हमने बहुत समझाया तो नाराज हो गया। दाज्यू, काशीपुर पुलिस ने तस्कर को एक किलो गांजे के साथ पकड़ लिया। जगह-जगह एंटी ड्रग समितियों का काम चल रहा है बल। युवाओं को खूब समझाओ कह रहे हैं लेकिन कौन किसकी कितनी सुन रहा है आप जानने ही वाले ठैरे। अपना लबलू बात-बात पर 'जो हमसे टकराएगा चूर-चूर हो जाएगा' नारे लगा देता है।

हम नैनीताल में शूटिंग देख रहे थे तभी पता चला कि देहरादून में बेरोजगारों पर लाठीचार्ज हो गया है। दाज्यू, चुट्टान सबसे आसान दवा होने वाली ठैरी लेकिन गरीब युवाओं पर क्य बीत रही होगी। सरकार कह रही है, नकल विरोधी सख्त कानून बना दिया है। गुस्से से भरी दुनिया में कब तक यह सब चलता रहेगा? कानून और चुट्टान........। किच्छा में पालिका चैयरमैन की फर्जी मोहर बना दी बल। अब जाँच-पड़ताल चल रही है। हल्द्वानी नगर में नगर आयुक्त को गुस्सा आ गया उन्होंने घटिया गुणवत्ता पर जेसीबी से नवनिर्मित सड़कें उखड़वा दी। दाज्यू, बस चल रहा है........देख रहे हैं.......सुन रहे हैं.........। लोहाघाट के पूर्व विधायक पूरन फर्त्याल को भी गुस्सा आ गया और बोले- 'पार्टी पर भीतरघात करने वालों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।'

सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के पिथौरागढ़ और बागेश्वर कैम्पस के लिये चयनित शिक्षकों की सूची जारी होने के बाद कई शिक्षक सोच-विचार में हैं कि अब कैम्पस में जाएं या न जाएं। जबकि पिथौरागढ़ में छात्र नेता नए महाविद्यालय बनाये जाने की मांग को लेकर आन्दोलन कर रहे हैं।

दाज्यू, सीएम पुष्कर धामी को एक सर्वे में सबसे हैंडसम, सबसे सुन्दर मुख्यमंत्री चुने जाने पर कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज ने बधाई देते हुए इसके उत्तराखण्ड के लिये गौरव बताया और सीएम धामी को बुरी नजर से बचने को काला टीका लगाने की सलाह भी दी। दाज्यू, महाराज उनकी नजर उतारने की बात भी कह रहे हैं। राजनीति और राज काज में सबकुछ लगा ठैरा.......।

दाज्यू, हल्द्वानी नगर निगम ने दो हजार से अधिक भवन स्वामियों को गृह कर न देने का नोटिस दिया है। दाज्यू, स्वामी तो स्वामी होने वाला ठैरा....देते रहेंगे कर वगैरह। इस शहर के हीरानगर स्थित पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच की भूमि को लेकर दो पक्ष आमने-सामने हैं। गोलज्यू के मन्दिर में जागर भी लगी लेकिन गोलज्यू अवतार ने शिव मन्दिर बनाने को कह दिया। दाज्यू, गोलज्यू शिवज्यू का मन्दिर बनाने को कह रहे हैं बल। रामनगर के बेलाझाल में प्रधान समेत कई लोगों पर छेड़छाड़ मारपीट का मुकदमा दर्ज हुआ है। दो पक्ष भिड़ गये थे बल। रुद्रपुर में कृषि लोन के नाम पर बैंक को 75 लाख रुपये का चूना लगा दिया गया। निजी बैंक के लीगल प्रबन्धक ने शिकायती पत्र दिया है।

दाज्यू, प्रदेश में चल रहे मदरसों की जाँच के लिये समाज कल्याण मंत्री चन्दन रामदास ने कमेटी बना दी है बल। इनकी मान्यता और मिलने वाली सरकारी सहायता का क्या हो रहा है, इस पर जाँच होगी। दाज्यू, सब गुलाल हो रहा ठैरा। नैनीताल के डीएम साब की बैठक में तय किया गया है कि शराब की खाली बोतल वापस करने पर दस रुपये मिलेंगे। ये बहुत खुशी की बात है क्योंकि कबाड़ वाला दो रुपये में ले रहा था बल। इस रोजगार में भी कई पल रहे ठैरे। होली में बहुत बोतल जमा होंगी..

-तुम्हारा भुली झकरुवा

पुरानी पेंशन बहाली को लेकर महारैली

हल्द्वानी। पुरानी पेंशन बहाली की मांग को लेकर प्रदेश के तीन दर्जन से अधिक कर्मचारी-अधिकारी संगठनों ने महारैली करते हुए सरकार को चेतावनी दी। महारैली में संगठनों के राष्ट्रीय, प्रदेश स्तर के नेताओं से लेकर स्थानीय नेता सक्रिय रहे और कहा कि अक्टूबर 2005 के बाद नियुक्त सरकारी कार्मिकों की पुरानी पेंशन स्कीम को तत्कालीन केन्द्र सरकार ने समाप्त कर कार्मिकों के साथ छलाव किया है। सरकार ने कार्मिकों के 30-35 साल की लम्बी राजकीय सेवा के उपरान्त उनके वेतन से ही कटौती किए अंशदान को शेयर बाजार में लगाने का निन्दनीय कार्य किया है। नई पेंशन योजना लागू कर कार्मिकों के साथ कुठाराघात किया है। नई पेंशन योजना पूरी तरह शेयर बाजार पर निर्भर है। सरकार पुरानी व्यवस्था लागू करे।

ई-ग्रन्थालय से जुड़ना अनिवार्य

प्रदेश के राजकीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं को ई ग्रन्थालय में पंजीकरण अनिवार्य होगा। इसके लिये बकायदा तीन दिवसीय व्यवहारिक प्रशिक्षण भी करवाया गया है। इस प्रशिक्षण के लिये कालेजों से प्रतिनिधि देहरादून में जुटे। इन्हें सम्बोधित करते हुए शिक्षामंत्री धनसिंह रावत ने कहा कि यदि किसी संस्थान में पंजीकरण का काम पूरा नहीं होता है तो प्राचार्य व पुस्तकालय अध्यक्ष को जिम्मेदार माना जायेगा।

चारधाम यात्रा ऑनलाइन पंजीकरण

चारधाम यात्रा के लिये इस बार केवल ऑनलाइन पंजीकरण होगा। इसके लिये ऑफलाइन विकल्प नहीं दिया गया है। यात्रियों के पंजीकरण की जाँच मार्ग पर तीन जगह की जायेगी। पर्यटन विभाग की बेबसाइट और मोबाइल एप पर सारी जानकारी उपलब्ध होगी। परिवहन सचिव अरविन्द सिंह ह्यांकी की अध्यक्षता में हुई बैठक में तय किया गया कि यदि यात्री पूर्व में पंजीकरण नहीं करा पाएगा तो उसकी मदद को हरिद्वार व ऋषिकेश में अतिरिक्त टीमें तैनात की जाएंगी।

हल्द्वानी में फ्लाईओवर का सर्वे

हल्द्वानी। शहर को जाम से छुटकारा दिलाने के लिये फ्लाईओवर का सर्वे कार्य जारी है। इसके लिये नैनीताल रोड और कालाढूंगी रोड पर निर्माण होने वाले फ्लाईओवर का जिम्मा गुरुग्राम की एक कम्पनी को दिया गया है। हल्द्वानी के दोनों मुख्य मार्गों पर करीब 6 महीनी सर्वे कार्य चलेगा। जिसके बाद रिपोर्ट अनुसार निर्माण का कार्य किया जायेगा। सर्वे के लिये 81 लाख रुपये मंजूर हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नवीन जोशी के उपन्यास पर चर्चा- ३

देवभूमि डिवेलपर्ड : विकास की गति धीमी करने की अनुसंसा करता है

डॉ.प्रयाग जोशी

वर्षभर में ही चकाचक 'नेचर हट्स' बनने शुरु हो जाते हैं। पर्यटकों की आवक शुरु होती है। हट्स की देखरेखस आगतों के स्वागत-सत्कार के लिए गाँव के ही महेश को नौकरी में रख लिया जाता है। रेशम की चौकीदारी में और सोहनलाल की फर्शशी के स्थान पर नियुक्ति होती है।

मुमकोट में ब्राह्मण कम हैं। वहाँ के गोबर्द्धन तिवारी के दो लड़कों को खड़िया के खुदान का ठेका सरकार से मिला हुआ है। गाँव के पैताने बहने वाली कालीगाड़ के बार तल्ली रौतेली और मल्ली रौतेली गाँव ठाकुरों के हैं। रौतेला, जाति आस्पद से गाँव का नाम पड़ा है। यह जाति मध्यकाल के कमाऊँ के राजाओं की बंशज मानी जाती है।

सुमकोट से चारेक मील की दूरी पर लिलगाँव शिल्पकारों का है। वहाँ ढोली, लोहार, डणकनेर, दर्जी उगैरह रहते हैं। वहीं के पढ़-लिख कर अफसर बने एक नौजवान ने उस गाँव का नाम शिल्पग्राम कर दिया है।

नरराम वहाँ का शयाना है। उसका एक लड़का नौकरी में है। दो खेती करते हैं। गाँव में सबसे बड़ा घर उसी का है। वहाँ के ग्राम सभा की सीट अनुसूचित जाति के लिये आरक्षित हुई है, नेताओं का वहाँ आना-जाना भी बढ़ गया है। इस प्रकार सिमाला और सुमकोट में विकास की दो समानान्तर कहानियाँ चल रही हैं। सिमाला विकास पुराने और सुमकोट नूतन तरीके का प्रतिनिधि जैसा बनता मालूम होता है। दोनों के विकास को पृथक-पृथक नीतियों, समानान्तर कहानियों के जरिये दोनों के सिरों को जोड़कर लोक जीवन में प्रविष्ट होती हैं।

कथाकार के एयरोस्पेस में निर्मित हो रहे इतनी बहुत कि जो गिनती में न समा सकने वाली हों, देवभूमि में चल रही नान्तमुखी और सर्वतोभद्र पुराणकथाओं को आद्योपान्तता में सुनी और गुनी जाय तो उनका परायण जिस महानीराजन में होता है, उसके साथ गाई जाने वाली प्रार्थना के पाठ को कहना होगा 'देवी के थान को पतुरिया नाचे ता थइया होत'। यह प्रस्तुत आख्यान का नवां अन्तिम परिच्छेद सार्थक शीर्षक है। इस महाकथा को लेखक ने पानी की घूंट पी पी कर उसी भाँति सुनाया है जैसे लहना सिंह ने अपने देश के भूगोल में नहीं फ्रांस के बिरुद्ध ईस्ट इण्डिया कम्पनी की तरफ से इग्लैंड के लिए लड़ी जा रही लड़ाई में 'उसने कहा था' कहानी बजीर को सुनाई थी। उक्त महाकथा के श्रीगणेश का मुहूर्त आठ नवम्बर 2000 की रात को ज्यों ही हुआ, लखनऊ के विधान भवन के गलियारों में चर्चाएं चलनी शुरू हुई कि उत्तरांचल जाओ, एकपद ऊपर पाओ। स्टेशल इन्क्रीमेण्ट लो। नये राज्य में खाने- कमाने के प्रभूत अवसर हैं। कन्स्ट्रक्शन......

इन्हीं चर्चाओं के बीच दून एक्सप्रेस से भर-भर कर आने लगे थे बिल्डर, ठेकेदार, भू माफिया, सत्ता के गलियारों में चक्कर लगाने वाले दलाल फिक्सर! उन्हीं के साथ कुमाऊँ के मूल के, लखनऊ में जमे जमाए डेवलपर कुन्दन शाह जी अपने गृह राज्य में भी कारोबार का विस्तार करने आते हैं। नयी अस्थायी राजधानी देहरादून में जहाँ उनके ससुर, वित्तमंत्री के विशेष सचिव होकर आए हैं, ने राजपुर रोड पर एक बंगला किराए पर लेते हैं। उस पर देवभूमि डेवलपर्स का बोर्ड लगाते हैं। वह उनका ऑफिस भी है आवास भी। सहस्रधारा रोड पर दो एकड़ जमीन खरीदते हैं और 'कूर्मांचल कॉटेज' और निर्माण की शुरुआत करते हैं।

रोजगारों का सृजन होने लगता है। बूंद-बूंद टपकने वाली आर्थिकी के लिए मुँह बाए इन्तजार में खड़ी पहाड़ी लड़कों की आवक होने लगती है। बढ़ रहे कार्यालयों, कोठियों में साफ-सफाई, झाड़ू बुहारू, चौकीदारी, रिसेप्सनी करने, ग्राहकों को अटेन्ड करने, निर्माण के साइडों की देखरेख, ठेकेदारों की मुंशीगिरी करने, साहबों के कुत्तों को टहलाने, गाड़ियों को धोने, रोज की जरूरतों के सामानों की होम डेलेवरी करने जैसे कामों में रोजगार खोजने के लिए जिस भाँति उत्तराखण्ड के नौजवान दिल्ली और लखनऊ का रूख करते थे, देहरादून आने लगते हैं।

यह यथातथ्य है कि माधव त्रिपाठी नाम का लड़का पूर्वोक्त डिवेलपर को उपलब्ध हो जाता है। संयोग नहीं यह भी यथार्थ है कि माधव त्रिपाठी के ही गाँव का एक विलक्षण मीडियाकर पुष्कर भी उसी गाँव का है जिसे छः वर्ष की उम्र में उसके पिता नन्दाबल्लभ पढ़ाने-लिखने और अपनी निगरानी में देख-रेख व लालन-पालन की बेहतरी को देखते हुए इस उम्मीद से लखनऊ ले आए थे कि योग्य और बेहतर नगारिक भी बनेगा और नौकरी में भी लगाऊँगा। ग्रेजुएशन के पहले वर्ष पहुँचते ही उसकी रूचि उत्तराखण्ड में चल रहे नशा-विरोधी आन्दोलनों में हुई तो जाकर उन्हीं के समर्थन में सहभागिता जैसी करने लगा। उनसे सम्बन्धित खबरों की रिपोर्ट लखनऊ के अखबारों को देता था। रफ्ता-रफ्ता पत्रकारिता का शौकीन बन बैठा। रूचि, शौक और हुनर, इल्म में बढ़ता गया और वह खुली मानसिकता से उत्तराखण्ड के यथार्थ को समझने लगा। वहीं आज प्रस्तुत कृति में वहाँ के तथा-कथित विकास को परख रहा है। उसकी प्रामाणिकता को प्रत्यक्ष जाकर देखने हेतु वह बार-बार अपनी दीदी के गाँव सिमाला और अपने गाँव के परिपार्श्व को देखने सिमल्ता की ओर जाता रहता है। नवीन ने इस उपन्यास की शुरुआत उत्तरोत्तर क्रम में न करके जेम्स जॉयस की जैसी चेतना प्रवाह शैली में की है। अंग्रेजी में इसे 'फ्लैशबैक' से सेट करते हैं। सरल ढंग से कहें तो इस शैली में वर्तमान में चल रहे मन के प्रवाह में, विगत के स्मृति-बिम्ब आते जाते हैं। लेखक, अंग्रेजी व्याकरण की भाषा में, कन्टीन्यूअस (वर्तमान) को कहानी के कत्थ्य से जोड़ता है। उसके सहारे वह अपनी खुली आँखों से, समाज में बढ़ते जाते अर्थतन्त्र की महत्ता, उसकी आड़ में छिपे दुरापन्न छल-छन्द, दुर्विनीत आचरण, दुर्घटनाएं, बलात्कार, हत्याएं, लोगों की विरुद्ध हो रहे सरकारी कारनामों, सहिष्णु-सरलता, और कम संसाधनों में भी धीरता बनाए रखने की नैसर्गिक वृत्ति, उम्मीदों के सहारे जीने की मूल्यवत्ता और सौहार्द बनाए रखने आदि प्रसंगों को वैसे ही रोक लेता है जैसे विज्ञापन टीवी में समाचारों को रोकते हैं। क्रमश:

दोहे
मेरे सांवरे

1- भाद्र मास तिथि अष्टमी, हुई खूब बरसात।
द्वारपाल सब सो रहे, मिली हमें सौगात।।
2- धन्य हुई भारत-धरा, रूप धरा गोपाल।
मुदित हुए वसु-देवकी, चूमे बालक भाल।।
3- पाप धरा में जब बढ़े, हरि लेते अवतार।
रूप धरा घनश्याम का, किया कंस संहार।।
4- रखा कृष्ण को टोकरी, चले नन्द के गाँव।
राह दिये यमुना नदी, ज्यों ही छूए पाँव।।
5-बस इतनी सी चाह है, जपूँ श्याम का नाम।
रूह तजे जब देह को, मिले कृष्ण का धाम।।
6- गोपी ललिता रूप में, चली लिए गोपाल।
दूध पिलाने लगी तब, रूप बना विकराल।।
7- कजरारे से नैन हैं, श्याम सलोना गात।
मेरे मन में है बसी, गीता की हर बात।।
8- तारण हार बने कृष्ण, मीरा, गोपी, ग्वाल।
मेरा भी तारण करो, गिरधारी गोपाल।।
9- श्याम सलोने कृष्ण से, लगी मंजु को प्रीत।
खाएँ सौगन्ध गोपियाँ, कान्हा मेरा मीत।।
10- राधा गागर संग ले, आई जमुना तीर।
बंशी की धुन जब सुनी, राधा हुई अधीर।।
11- अपनी धुन में बावरी, किसको ढूँढें रोज।
कृष्ण बसे तेरे हृदय, मीरा बनके खोज।।
12- यमुना के तट पर किशन, छेड़े मीठी तान।
रास रचे लीला करे, लेकर मृदु मुस्कान।।
13- ब्रज रज बन जा सखी, ब्रज की धारा महान।
महिमा अमित ब्रजेश की, ब्रज है स्वर्ग समान ।।
14- ध्यान करूँ गोविन्द का, उससे मेरी प्रीत।
रोम- रोम मेरा कहे, कान्हा मेरा मीत।।
15- बचपन से ही कृष्ण को, देखा मैंने रोज।
उसकी चाहत बन गई, मेरी छवि का ओज।।
16-जीवन भर मैं करुँगी, कान्हा तुझसे प्यार।
अपना जीवन वार दूँ, तुझ पर मैं शत बार।।
17- लगन लगी है घनश्याम से, रोज करूँ इजहार।
बस उत्कंठा दर्श की, करती हूँ इकरार।।
18-सुन मुरली की तान को, दौड़ी जमुना तीर।
श्याम संग थी गोपियाँ, मिटी हृदय की पीर।।
19- सुन द्रोपदी पुकार को, बढ़ा दिए तुम चीर।
गिरधारी अब तो हरो, मेरे मन की पीर।।
20- तारण- हारी मोहना, मीरा, गोपी, ग्वाल।
मेरा भी तारण करो, अब गिरिधर गोपाल।।
21- सुन मुरली की तान को, दौड़ी जमुना तीर।
नैना तरसे दर्श को, उर में जागी पीर।।
22- जमुना जी के तीर पर, गैया रहे चराय।
मंद-मंद मुसकाय के, वंशी रहे बजाय।।
23- मटकी फोड़ी कृष्ण ने, मुख माखन लिपटाय।
पूछ रही माँ यशोदा, मुख मासूम बनाय।।
24- वंशीवट की छाँव ने, कृष्णा छेड़ते तान।
रास रचे लीला करे, ले करके मुस्कान।।
25- कजरारे से नैन हैं, मन मोहक मुस्कान,
मेरे उर में है बसी, अब मुरली की तान।।
26- मैं हूँ तेरी राधिका, तुम हो मेरे मीत।
तुम धड़कन हो हृदय की, होठों के तुम गीत।।
27- हरदम रटते जो रहें, राधे-राधे नाम।
पल भर में उसके बनें, सारे बिगड़े काम।।

-मंजू बोहरा बिष्ट,
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

बसन्ती धरा

कहो बसन्त! तुम आ गए हो...?
शायद चुपके चुपके आना चाहा था तुमने
पर तुम्हारे कदमों की मन्द आहट
सहज ही पहचान ली धरा ने...
तुम्हारे आने का सुखद एहसास
हो गया होगा उसे
तभी तो सज धज कर बैठी है
तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा में
पीत परिधान में लिपटी हुई धरा
पीत प्रीत का रंग है ना....?
पीली हल्दी, पीला चन्दन, पीला कुमकुम
सौभाग्य का प्रतीक चिन्ह है ना....?
सतरंगी फूलों का पहन हार
किए हैं धरा ने विविध श्रृंगार
सब कुछ तो है कजरा गजरा
जगमग सितारों का आँचल पसरा
स्वीकार करो उसका प्रणय निवेदन
यह प्रीत का मौसम है ना.....?
जब आ ही गए हो तो
कुछ समय को ठहर जाना
हो जाने दो धारा का मनुहार पूरा
फिर तुम चले जाना
तुम रुकोगे पूरा यकीन है मुझे
यही प्रीत की रीत है ना......?
और हाँ, जाने से पहले
फिर आने का वादा
धरा से करके जाना....।

-अमृता पाण्डे

ज्योतिष की बातें - 115

27 फरवरी 2023 को बुध कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा जो कि शनि की राशि है। सूर्य और शनि वहाँ पर पहले से ही विद्यमान हैं। इसके दो दिन पूर्व 25 फरवरी को बुध अस्त भी हो जाएगा। अत: बुधादित्य योग बनने के बाद भी बुध अत्यन्त निर्बल रहेगा। अगले 18 दिन व्यापार, वाणिज्य, गणित, लेखनकार्य आदि अपने कारक विषयों में बुध मकर, वृश्चिक, कन्या, कर्क, वृषभ और मेष राशि के जातकों को बुध अल्प मात्र में शुभफल प्रदान कर सकता है। शेष राशियों के लिए सामान्य फल समझना चाहिए ।

होलाष्टक- होलिका दहन के 8 दिन पूर्व होलाष्टक प्रारम्भ हो जाता है। यह शुभ समय नहीं माना जाता है। अत: फाल्गुन शुक्लपक्ष अष्टमी, सोमवार 27 फरवरी 2023, से गृहप्रवेश आदि शुभ कार्य तथा यज्ञोपवीत, विवाह आदि शुभ संस्कार अगले आठ दिनों तक स्थगित रहेंगे ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

सम्यक विचार- 6

व्यर्थ की बर्बादी

एक मकान में पानी के लिए 10-12 नल लगे रहते हैं। जहाँ पर पानी जरूरत, वहीं पर नगर। लगभग 200 लीटर पानी प्रति व्यक्ति अर्थात 1000 लीटर पानी प्रतिदिन एक परिवार में खर्च होता है। यदि उसी मकान में केवल एक ही नल हो तो कितना खर्च होगा? शायद 100 लीटर प्रति व्यक्ति। और यदि वही पानी 15-20 मीटर दूर से बाल्टी से भरकर लाना हो तो केवल 50 लीटर पानी प्रतिव्यक्ति खर्च होगा। अर्थात व्यक्ति को आवश्यकता तो केवल 50 लीटर पानी की है लेकिन वह खर्च करता है। 200 लीटर ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी मात्र 35 लीटर पानी प्रति व्यक्ति खर्च होता है। इसका अर्थ यह है कि सरलता से और बिना श्रम के पानी उपलब्ध होता है तो 4 गुगा पानी व्यर्थ होता है।

यह सिद्धान्त हर वस्तु पर लागू होता है। जो भी वस्तुअत्यधिक सुलभ होती है और बिना परिश्रम के प्राप्त होती है उस वस्तु का चार गुना उपयोग हो जाता है। चाहे वह बिजली महंगी मिलती है वे एक माह में लगभग 100 यूनिट खर्च करते हैं और जिन्हीं बिजली नि:शुल्क प्राप्त होती है वे 1000 यूनिट तक प्रति महीने खर्च करते हैं। इस प्रकार की बर्बादी का परिणाम होता है पर्यावरण विनाश और अन्ततोगत्वा व्यक्ति का स्वास्थ्य का भी नाश होता है। **-सरल**

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

गंगोलीहाट क्षेत्र की समस्याओं के लिये एकजुट

क्षेत्र की ज्वलन्त समस्याओं के लिये लोग एकजुट, रणनीति तय

गंगोलीहाट। तमाम तरह की समस्याओं से जूझ रहे गंगावली क्षेत्र के लोग एक बार फिर से एकजुट होने लगे हैं। उन्होंने रणनीति बनाते हुए ऐलान किया है कि यदि उनकी अनदेखी हुई तो आन्दोलन खड़ा कर दिया जायेगा। गंगोलीहाट शहर से लेकर दूरस्थ क्षेत्रों तक लम्बे समय से विभिन्न मांगों को अलग-अलग मंचों से उठाया जाता रहा है और लम्बे आन्दोलन छिड़ चुके हैं लेकिन राजनीति के कुचक्र और उलझनों में समस्याएं सुलझने का नाम ही नहीं है। ऐसे में जागरुक जनों की पहल पर तमाम संगठनों ने एकजुटता दिखाई है। तय किया गया है कि क्षेत्र की ज्वलन्त समस्याओं के निराकरण के लिये एकजुट कदम बढ़ाया जायेगा। इसके लिये संघर्ष समिति के माध्यम से आवाज उठाई जायेगी।

यहाँ स्थानीय व्यापारियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, राजनीतिक व गैर राजनीतिक संगठनों की बैठक हुई। पूर्व ग्राम प्रधान शंकर लाल चौधरी, वरिष्ठ राज्य आन्दोलनकारी कल्याण सिंह धानिक, हयात सिंह बोरा की अगुवाई में आयोजित बैठक में वक्ताओं ने स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की लचर व्यवस्थाओं, चिकित्सकों की नियुक्ति, राजकीय महाविद्यालय तक सड़क मार्ग निर्माण, ऊर्जा निगम द्वारा अधिभार के रूप में संयोजन शुल्क वसूलने, गंगोलीहाट को पर्यटन नगरी के रूप में विकसित किये जाने, तहसील में स्थायी एसडीएम की नियुक्ति, महाविद्यालय में एमए कक्षाएं संचालित किये जाने व अन्य टेक्निकल ट्रेड प्रारम्भ किये जाने पर चर्चा की गई। बैठक में नरेन्द्र रावल, सुरेन्द्र बिष्ट, भगवती पन्त, नारायण बोहरा, सभासद भूपाल आर्य, मनोज टम्टा, राजू धानिक, पंकज खाती, राजीव बोरा, राम सिंह मेहरा, पीएल शाह, रवि बोरा उपस्थित थे।

भीमताल औद्योगिक घाटी का प्रयास कितना सच?

रामगढ़ स्थित उद्यान विभाग की भूमि को सिडकुल को हस्तांतरित पर आक्रोश

भीमताल। इन दिनों रामगढ़ स्थित उद्यान विभाग की भूमि को लेकर बहुत हल्ला मचा हुआ है। असल में कृषि पट्टी की भूमि पर तमाम लोगों की नज़र है और इसकी सच्चाई सामने आनी है। भीमताल को औद्योगिक घाटी का सपना दिखाया जाता है, इसका सच कितना है? यह जान लेना चाहिये।

इस बारे में विधायक रामसिंह कैड़ा का कहना है कि भीमताल स्थित औद्योगिक घाटी में कई कारोबारियों ने पहले से उद्योग खोलने के लिये प्लाट बुक कराए हैं। लेकिन लम्बे समय से खाली पड़े इन प्लाटों में कोई उद्योग शुरू नहीं हुआ है। इसके लिये प्लॉट मालिकों को नोटिस दिया जा रहा है। साथ ही भीमताल में औद्योगिक घाटी को फिर से अस्तित्व में लाने के हरसम्भव प्रयास किए जा रहे हैं।

रामगढ़ स्थित उद्यान विभाग की भूमि को सिडकुल को हस्तान्तरित करने को लेकर स्थानीय लोगों में आक्रोश है। ऐसे में उद्यान बचाओ संघर्ष समिति के बैनर तले ग्रामीणों ने अनिश्चितकालीन धरना शुरु कर दिया। क्षेत्रवासियों का कहना है कि उद्यान विभाग की भूमि को सिडकुल को हस्तान्तरित करने के बजाय सरकार को भीमताल स्थित औद्योगिक घाटी को फिर से अस्तित्व में लाना चाहिये। इससे भीमताल, भवाली, हल्द्वानी, रामगढ़ आदि इलाकों के युवाओं को बेहतर रोजगार मिलेगा। जबकि उद्यान विभाग की 4.4 एकड़ भूमि को सिडकुल देने से यहाँ की खेतीबाड़ी पर बुरा असर पड़ सकता है।

काश्तकार देवेन्द्र मेर का कहना है कि रामगढ़ उद्यान विभाग की भूमि को हस्तान्तरण का विरोध होगा। ज्येष्ठ उप प्रमुख प्रदीप ढैला ने कहा है कि उद्यान की भूमि सिडकुल को देने से कृषि पर प्रभाव पड़ेगा।

चारधाम यात्रा : ग्रीनकार्ड-ट्रिप कार्ड के जरिये सीधे यात्रा पर जाएंगे वाहन, यात्रियों को राहत

परिक्रमा

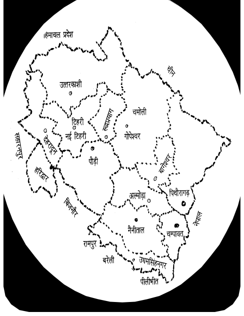

इस बार चारधाम यात्रा में यात्रियों को चैकिंग के नाम पर परेशान होने की जरूरत नहीं पड़ेगी, इसके लिये बकायदा वाहनों को स्टीकर जारी होंगे। वाहन के प्रत्येक चक्कर के लिये अलग-अलग रंग के स्टीकर होंगे।

तीर्थयात्रियों को चारधाम यात्रा पर लाने वाले वाहनों को बीच रास्ते में रोककर जाँच होने से समय खर्च और असुविधा को देखते हुए तय किया गया है कि वाहन चालकों को ग्रीन और ट्रिप कार्ड जारी करने के साथ ही वाहन के शीशे पर स्टीकर लगाए जाएंगे। इससे यात्रा वाहनों की पहचान करना आसान होगा। इसके लिये देहरादून के अलावा हरिद्वार, ऋषिकेश, रुड़की, विकासनगर में काउण्टर खोलने के साथ ही तमाम व्यवस्था दुरुस्त की जा रही है।

चारधाम यात्रा के नोडल अधिकारी व परिवहन विभाग के आरटीओ (प्रशसन) सुनील कुमार शर्मा ने बताया कि ऋषिकेश, हरिद्वार में ग्रीन कार्ड बनाने के साथ ही तमाम कागजी औपचारिकता पूरी करने के बाद वाहन संचालक तीर्थ यात्रियों को लेकर सीधे यात्रा पर जा सकेंगे। उन्होंने बताया कि चारधाम यात्रा पर जाने वाले वाहनों को जगह-जगह जाँच के नाम पर रोके जाने से न सिर्फ दिक्कतें होती हैं बल्कि समय भी ज्यादा लगता है। वाहनों के समय पर हरिद्वार, ऋषिकेश नहीं लौटने पर इन दोनों जगहों पर तीर्थयात्रियों की भारी भीड़ जमा हो जाती है।

आटीओ (प्रशासन) ने बताया है कि चारधाम यात्रा पर जाने वाली बसों के लिये हर यात्रा के लिये अलग रंग के स्टीकर जारी किये जायेंगे। इन्हीं के जरिए इस बात की जानकारी मिलेगी कि सम्बन्धित बस कितनी बार चारधाम यात्रा पर जा चुकी है।

सीमांत की लचर शिक्षा व्यवस्था पर भड़के

मुनस्यारी, धारचूला के स्कूलों में शिक्षकों के रिक्त पद भरे जाने की मांग को लेकर ज्ञापन भेजा

मुनस्यारी। सीमान्त क्षेत्र मुनस्यारी तथा धारचूला की लचर शिक्षा व्यवस्था के खिलाफ पंचायत प्रतिनिधियों ने हुंकार भरते हुए प्रदेश सरकार के खिलाफ आन्दोलन की धमकी दी। कहा कि दोनों विकास खण्डों से 83 शिक्षकों का तबादला हुआ लेकिन आया एक भी नहीं। शिक्षा की बदहाल स्थिति के कारण चीन सीमा पर बसे भारतीय गाँव खाली हो रहे है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। कथाकथित राष्ट्रवादी सरकारें चुप्पी साधे हुए है।

इस आन्दोलन की अगुवाई कर रहे जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने प्रदेश के मुख्यमंत्री को ज्ञापन ईमेल से भेजा। उन्होंने कहा कि चालू शिक्षा सामें प्राथमिक से लेकर माध्यमिक तक के विद्यालयों से 83 शिक्षकों का तबादला बिना प्रतिस्थानी के ही कर दिया गया। बिना प्रतिस्थानी के कार्यमुक्त नहीं करने के जिलाधिकारी के आदेश को दबा दिया गया। उन्होंने कहा कि नये शिक्षा सत्र से पहले सीमान्त के विद्यालयों में शिक्षकों की सत प्रतिशत नियुक्ति नहीं हुई तो दोनों विकास खण्डों में सरकार के किसी भी मंत्री तथा मुख्यमंत्री को घुसने नहीं दिया जाएगा। कहा कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए सरकार को पंचायत प्रतिनिधियों द्वारा हिमाचल प्रदेश की तरह स्थानान्तरण नीति बनानी चाहिए। पड़ोसी देश नेपाल से भी सरकार आउटपुट ले सकती है। कहा कि सरकार की मंशा सरकारी स्कूलों में ताला लगाकर बन्द करने की है। शिक्षकों के अभाव में हजारों छात्र-छात्राओं का भविष्य प्रति वर्ष बर्बादी की कगार पर पहुँच रहा है। उत्तराखण्ड में शिक्षा जैसे गम्भीर विषय पर ना सरकार का ध्यान है ना ही विपक्षी दलों का। सीमा पर बसे गाँव शिक्षा की खराब व्यवस्था ज्यादा ही झेल रहे हैं।

किच्छा-खटीमा के बीच नया ट्रैक, बढ़ेगी कनेक्टिविटी

रेल बजट में ११२ करोड़ रुपये मंजूर, १० करोड़ आवंटित सर्वे पहले हो चुका

बरेली। किच्छा-खटीमा के बीच 57.7 किलोमीटर लम्बी रेल लाइन के लिये बजट में 122 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई है। इज्जतनगर मण्डल को वर्ष 2013-24 में दस करोड़ रुपये मिलेंगे। लाइन बिछाने के लिए जहाँ रेलवे भूमि उपलब्ध नहीं है, उन्हें चिह्नित कर उनका अधिग्रहण करेगा।

पिंक बुक के अनुसार पूर्वोत्तर रेलवे को नई रेल लाइनों के लिए 792 करोड़ रुपये मिले हैं। इसमें 126 करोड़ रुपये इज्जतनगर मण्डल के लिए मंजूर हुए हैं।

किच्छा-खटीमा रेल लाइन के लिए सर्वेक्षण पहले ही हो चुका है। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने भी इसकी पैरवी की थी। अब मंजूरी मिली है। खटीमा से लेकर किच्छा व तराई क्षेत्र के लोगों को इसका लाभ मिलेगा। बरेली वालों के लिए भी खटीमा तक आना-जाना आसान होगा। ट्रैक बनने पर ट्रेनों की संख्या भी बढ़ सकती है। टनकपुर से हल्द्वानी और काठगोदाम की कनेक्टिविटी भी बढ़ेगी। किच्छा-खटीमा रेलवे लाइन बनने से यदि काठगोदाम-हल्द्वानी की तरफ से टनकपुर की ओर जाना हो तो उत्तराखण्ड के लोगों को कम दूरी तय करनी पड़ेगी। इससे अच्छी कनेक्टिविटी मिल जाएगी। सितारगंज स्टेशन भी बीच में पड़ेगा। पूरे क्षेत्र के औद्योगिक विकास को भी रफ्तार मिलेगी।

टनकपुर से रुद्रपुर और दिल्ली तक रेलवे की कनेक्टिविटी बेहतर हो जायेगी। दोनों प्रदेशों में हर बात-व्यवहार शुरु से है, ऐसे में आवागमन सुविधा का सुगम होना हर प्रकार से बढ़ोत्तरी ही है।

बजट में सरकार ने पूर्वोत्तर रेलवे को रेल ट्रैक के नवीनीकरण और मरम्मत के लिये 342 करोड़ का बजट दिया है। इसमें 25 करोड़ की धनराशि इज्जतनगर रेल मण्डल को मिली है। इस धनराशि से इज्जतनगर रेल मण्डल में दस वर्ष से पुराने रेल ट्रकों को बदलने का काम किया जायेगा।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

प्योली पर्वतीय लोकजीवन के करीब

डॉ.हरीश चन्द्र अन्डोला

पर्वतीय लोकजीवन प्राकृतिक वातावरण में विचरण करता है और प्रकृति की सुन्दरता को देखकर झूम उठता है यही कारण है कि यहाँ के लोक जीवन में प्रकृति की इस रमणीयता की लोकगीतों, लोकनृत्यों, त्यौहारों, मेलों के रूप में सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। प्रकृति पुत्र कविवर सुमित्रानन्दन पन्त ने इस सुन्दरता को इन शब्दों में व्यक्त किया है, 'कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति चित्रण से मिली है जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्माचल प्रदेश को है', 'मेरे किशोर प्राण मूक कवि को बाहर करने का सर्वाधिक श्रेय मेरी भूमि के उस नैसर्गिक सौन्दर्य को है जिसकी गोद में पलकर मैं बड़ा हुआ हूँ', 'मेरे पर्वत प्रदेश के ढावल चंचल सौन्दर्य ने मेरे जीवन के चारों ओर सम्मोहन का जाल बुनना आरम्भ कर दिया था।' गढवाल एवं कुमाऊँ अंचलों में बंटे उत्तराखण्ड में मुख्यत: गढ़वाली एवं कुमाउंनी बोलियां बोली जाती हैं। नेपाल एवं तिब्बत की सीमा से लगे हुए क्षेत्र में नेपाली एवं तिब्बती भाषा का पुट देखने को मिलता है जबकि देहरादून के भाबर क्षेत्र में रहने वाले जौंनसार जनजाति के लोग जौंनसारी बोली बोलते हैं। भोटिया, थारू, बुक्सा, शौक, जौनसार इत्यादि यहाँ की प्रमुख जनजातियां हैं। इनके अपने रीति रिवाज, बोलियां एवं त्यौहार हैं। लोक गीत किस भी अँचल के हों, उनमें प्राय: जीवन के विविध रूपों का सुन्दर समावेश होता है। इनमें त्यौहार, रूप-रंग, हर्ष-उल्लास, भय, राग-द्वेष, विरह-वेदना, प्रेम, घृणा, बदलता परिवेश आदि सब कुछ उपस्थित रहता है। उत्तराखण्ड के लोकगीतों में झोड़ा, झुमैलों, चाँचरी, खुदेड़, कृषिगीत, उत्सवगीत, ऋतुगीत, देवताओं के आह्वान से सम्बन्धित जागर गीत एवं शादी-ब्याह और अन्य मंगल कार्य के अवसरों पर गाए जाने वाले शगुन गीत शामिल हैं। इन सभी प्रकार के गीतों में प्रकृति का सुन्दर चित्रण दृष्टिगोचर होता है। वसन्त ऋतु के आगमन के साथ ही समूची धरा रंग-बिरंगे फूलों का परिधान धारण कर कवियों, गीतकारों और कलाकारों को सृजन के लिए प्रेरित करती है। इस ऋतु में बुरांस, प्योली, कुंज, भिजौली, आडू, मेहल, खुबानी, आलूबुखारा एवं तमाम तरह की जंगली वनस्पतियां सुन्दर पुष्पों से आच्छादित हो जाती हैं। प्योली और बुरांस का फूल पर्वतीय अँचल के जनजीवन से जुड़ा हुआ है आमतौर पर वसंत पंचमी के दौरान छटा बिखरने वाला प्योली का फूल इस बार समय से पहले ही खिल गया है। वसन्त पंचमी दो फरवरी को थी, लेकिन प्योली के फूल दिसम्बर के अन्त से ही खिलने लगे थे। इस समय थल घाटी में कई स्थानों पर प्योली खिल चुकी है। करीब 1800 मीटर की ऊँचाई तक पाए जाने वाले प्योली के फूलों को वसन्त के मौके पर खासतौर पर उपयोग में लाया जाता है। प्योली के फूलों से ही वसन्त पंचमी पर पूजन को शुभ माना जाता है। प्योली का बाटनिकल नाम रेनवासिया इंडिका है। एकदम पीले रंग का यह फूल जब खिलता है तो इसकी छटा दूर तक फैल जाती है। छोटे से आकार वाले इस फूल में चार या पांच पंखुड़ियाँ होती हैं। इस फूल में किसी प्रकार की कोई खुशबू नहीं होती। इसके गाढ़े पीले रंग का उपयोग रंग बनाने में भी किया जाता है। प्योली के फूलों की पंखुड़ियों को पीसकर घावों में लगाने से घाव जल्दी भर जाता है। प्योली को बकरियां बेहद पसन्द करती हैं,क्योंकि इसके फूलों में मिठास बहुत होती है। वसन्त से मौसम बदलने लगता है, ठीक उसी समय प्योली खिलता है, लेकिन इस बार दिसम्बर में तापमान बढ़ने से प्योली समय से पहले ही खिल गई। वहीं, समय से पहले प्योली के खिलने के बारे में जानकारों का कहना है कि अब पहाड़ के मौसम में लगातार बदलाव आ रहा है। कुमाऊँ में प्योली के फूल पर कई दन्तकथाएं भी प्रचलित हैं। कहा जाता है कि एक घायल राजकुमार का प्योली ने अपनी पत्तियों को पीसकर इलाज किया था। राजकुमार ने स्वस्थ होकर प्योली से शादी कर ली। वह प्योली को अपने महल में लाना चाहता था लेकिन प्योली जंगल की सुन्दरता और एकान्त को छोड़कर राजमहल में नहीं आई। राजकुमार ने प्योली के विरह में जंगल में ही प्राण त्याग दिए। प्योली के सुन्दर फूल पहाड़ के पर्यावरण के साथ-साथ लोकजीवन का भी अभिन्न हिस्सा हैं। इन पर ना जाने कितनी लोक कथाएं और लोकगीत लिखे गए। ब्रह्मकमल और मोनाल को भले राज्य पक्षी एवं राज्य पुष्प का सम्मानजनक ओहदा मिल चुका हो, लेकिन लोकजीवन व लोकसाहित्य में प्योली, बुरांश तथा न्योली, घुघुती और कुवा ने जो धामक दी, उससे ये लोकजीवन के पहचान बन गये. चाहे उत्तराखण्डी लोककथाएं हों अथवा लोकगीत, कथानक कहीं इन्हीं फूलों, पक्षियों अथवा काफल, बेडू, हिंसालू के इर्द-गिर्द ही घूमता है। फिर चाहे वह लोकगीत 'हिट रूपा बुरूंशी को फूल बणी जूंला' हो अथवा गढ़वाली खुदेड़ गीत 'हंगैला पातैला न्योली बासेंछ, घामिल मन उदास लागेंछ' हो या 'बेडू पाको बारमासा, नरैण काफल पाको चौता' लोकगीत तो लोकमानस में बेडू और काफल की महत्ता उजागर करती ही है, लेकिन यहाँ के लोकजीवन में तो पक्षी भी 'काफल पाको मैले नी चाक्खो' अथवा 'पुर पुतेई पुरै पुर' को सुर देकर लोक कथाओं को जन्म देते मुखर हो उठते हैं। कितना विचित्र व सहज है न -पहाड़ का लोकजीवन, जो फल, फूल और पशु पक्षियों के आलम्बन से मुखर हो उठता है। घुघुती (फाख्ता) तो मैदानी क्षेत्रों में भी होता है, लेकिन पहाड़ की घुघुती लोकमानस से मौन आलाप करती नजर आती है और कवि हृदय गा उठता है खुदा शब्द गढ़वाली लोकभाषा में नराई का प्रतीक है, जिसने गढ़वाली लोकगीतों में खुदेड़ लोकगीतों ने जन्म लिया और विरह प्रधान गीत बन गया। गढ़वाली लोकजीवन में प्योली को प्योली उच्चारण से जाना जाता है। 'कख रितु रैगे छोरी प्योली रौतेली' इस गढ़वाली लोकगीत में तो नायिका की सुन्दरता की तुलना ही प्योली पुष्प से ही कर दी गयी है। वन-उपवन में सुन्दरता के लिहाज से पुष्पों की कमी नहीं है, लेकिन लोकमानस को स्वत: उगने वाला यह प्योली का फूल ही आकर्षित करता है। क्या हिसालू, काफल, किल्मोड़ा, तिमला, बेडू, घिंगारू से स्वादिष्ट कोई फल उत्तराखण्ड में नहीं होते? लेकिन ये स्वत: उगने वाले फल लोकजीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। लोकजीवन ऊँची-ऊँची अट्टालिकाओं में वास नही करता, वह अपनी जमीन से जुड़ा जनमानस है और सहजता एवं सरलता से उपलब्ध प्राकृतिक उपादान ही उससे नजदीकी रखते हैं। कुमाऊंनी लोकगायक गोपाल बाबू गोस्वामी के गीत के ये बोल कुछ ऐसा ही कहते हैं 'उड़ि जा ओ घुघुति, न्हैजा लदाखा, हाल म्यारा बतै दिये, म्यार स्वामी पासा।' देखा जाय तो ऋतुरैण (चौत्र मास) में ही इन प्राकृतिक आलम्बनों घुघुती, कफुवा व न्योली के वेदनापूर्ण स्वर, इसी समय काफल, बेडू का पकना और बुरांश, प्योली का खिलना उस पर श्रृंगार प्रधान बसन्त ऋतु, सब मिलकर या तो 'हिट रूपा बुरूंशी को फूल बणी जूंलाह का स्वर देकर संयोग श्रृंगार का सृजन करते हैं अथवा वियोग की स्थिति में ये ही प्राकृतिक आलम्बन विरह वेदना को उद्दीप्त करते नजर आते हैं। कुमाउंनी के आदि कवि गुमानी को बुरांश का लाल पुष्प गुस्से से तमतमाता चेहरा दिखता है तो कविवर सुमित्रानन्दन पन्त 'सारे जंगल में त्वी जस क्वे न्हा रे क्वे न्हा' कहकर बुरांश पुष्प को जंगलों का राजा घोषित कर देते हैं। यही कारण है कि सहजता से सर्वसुलभ इन आलम्बनों को लोकजीवन व लोकसाहित्य ने गौरव प्रदान किया है। जब कि मोनाल व ब्रह्मकमल राज्य पक्षी व राज्य पुष्प होने के बावजूद आम न होकर खास है और पर्वतीय लोकजीवन से इतना नजदीकी रिश्ता नहीं जोड़ पाये।

(लेखक उत्तराखण्ड सरकार के अधीन उद्यान विभाग के वैज्ञानिक के पद पर कार्य कर चुके हैं वर्तमान में दून विश्वविद्यालय कार्यरत हैं।)

आपके पत्र

युवाओं का ड्रग्स की गिरफ्त में होना देश के लिये घातक

वर्तमान में बहुत सारे युवा ड्रग्स की गिरफ्त में होना देश के लिये घातक और समाज के लिये खतरनाक है। सकारात्मक नशा जिसे जुनून भी कहते हैं व्यक्ति समाज और देश के लिये हितकर होता है। ड्रग्स और मादक द्रव्यों का सेवन किसी अपराधिक मानसिकता को क्रियाशील करती है।

देश की राजनीतिक पाटियां अपने चुनावी हथकण्डों के लिये ड्रग्स और मादक द्रव्यों को अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिये जनता खासकर युवाओं को इसका शिकार बनाने के लिये परोसती है। वैसे भी कहावत है कि किसी मुल्क को बर्बाद करना है तो वहाँ की युवा पीढ़ी को नशे की गर्त में धकेल दो देश खुद-ब-खुद बर्बाद हो जाएगा।

अनिश्चित जीवन यापन, अन्धकार भविष्य से उत्पन्न नैराश्य पैदा करती स्थिति युवाओं को आत्मघाती कदम उठाने को मजबूर करती है। देश में राजनैतिक क्रिमिलाईजेशन के बारे में पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी बाजपेयी ने भी पार्लियामेंट में अपना दु:ख प्रकट किया था।

देश के सर्वोच्च न्यायालय ने भी स्पष्ट किया था कि संसद और प्रदेशों की विधान सभाओं में 36 प्रतिशत अपराधी पृष्ठभूमि के सांसद और विधायक विद्यमान हैं।

पूर्व राज्यसभा सांसद बीरेन्द्र सिंह ने कबूला है राज्य सभा की सीट 100 करोड़ में बिकती है। उपरोक्त सभी दृष्टान्त राजनीतिक दुश्चक्र बयां करती हैं।

राजनीतिक गलियारों में पैठ रखने वाला धनाढ्य व्यापारिक वर्ग राजनेताओं से सांठ-गांठ कर रिलायेन्स का मुफ्त में मोबाईल और कनैक्शन डिजिटल इण्डिया का सब्जबाग भी डग्स के कारोबार से कम नहीं है। न भाषा न लिपि न कलम न पाटी, जैसे बन्दर के हाथ लाठी, मुफ्त शिक्षा नहीं, मुफ्त मोबाइल क्यों जरूरी? हाल ही में महाराष्ट्र के गववासी तहसील पुगड़ जिला युवतमाल के ग्रामीणों ने पंचायत में फैसला लिया है कि 16 साल से कम उम्र के बच्चों के लिये मोबाइल प्रतिबन्धित कर दिया है। वैधानिक व्यवस्था नाबालिक को मोबाइल रखने का हक नहीं देती, यहाँ तक कि नौनिहालों को भी ऑनलाइन शिक्षा के लिये इसे वैधानिक बना दिया गया है। क्या बिडम्बना है।

ड्रग्स का कारोबार भारत में चरम पर है। हाल फिलहाल गुजरात के मुदरा पोर्ट पर 3000 किलो ड्रग्स पकड़ी गई जिसकी कीमत 21 हजार करोड़ रुपया आंकी गई है।

वर्तमान में सिकुड़ती हुई नौकरियों का दायरा किसान की उपज का वाजिब समर्थन मूल्य न मिल पाने से उपजा किसान असन्तोष भी ड्रग्स और मादक द्रव्यों की सहारा लेते लोग जिन्दगियां परिवर्तित होती मौत में राजनैतिक पैठ वाले सत्ता के बिचौलियों का आभामण्डल देश की राजनीति पर बुरी तरह हाबी हो गया है।

उपचार- स्वार्थपरख राजनैतिक ताने बाने से उपजे नैरास्य और नैरास्य से उपजे नशे और ड्रग्स की लत से युवाओं और देश को आर्थिक और सामाजिक क्रियाशील आश्वासन देकर देश की मुख्यधारा में जोड़ा जा सकता है। लेखक उत्तराखण्ड की पृष्ठभूमि से जुड़ा है इसलिये उत्तराखण्ड की कुछ समस्या भी इस उपचार प्रक्रिया पर समाहित की गई हैं-

1. पहाड़ों में चकबन्दी, घर बंटवारे को कलमी बंटवारे में तरमीम किया जाना आवश्यक है। ताकि लोग जुड़ सकें।
2. सामुहिक पुस्तकालय व समाचार पत्रों से जनता और खासकर युवाओं जोड़ना।
3. सम्पन्न लोग सामुहिक जानकारी के ध्वजवाहक की जिम्मेदारी लें।
4. राजनैथ्तक दुश्वारियों से समाज को जागरूक करना होगा।
5. आर्थिक रूप से कमजोरों के लिये सांध्यकालीन शिक्षा व्यवस्था।
6. जागरूकता अभियान को आन्दोलन के रूप में निरन्तर रखना होगा।

-टीम नेकी की दीवार
पी.सी. जोशी, रामनगर

कुटीर उद्योग

बांस और रिंगाल खेती की सम्भावना

रतन सिंह किरमोलिया

आज देखा जाए तो ग्रामीण क्षेत्रें में पर्यटकों के लिए जगह-जगह पारंपरिक शैली में शानदार एवं आकर्षक होम-स्टे बनाए जा रहे हैं। बाहर से आने वाले पर्यटक भी इन्हें खूब पसंद कर रहे हैं।कयेक जगह इनके साथ बांस और रिंगाल के टूरिस्ट हट भी बनाए जा रहे हैं। ये भी पर्यटकों को खूब भा रहे हैं।

परंतु बांस बाहर से मंगवाया जा रहा है। यहां तक पहुंचने में यह बहुत महंगा बैठ रहा है। रिंगाल भी अंधाधुंध ा एवं अनियंत्रि दोहन एवं संरक्षण के अभाव में अब करीब-करीब समाप्ति की कगार पर पहुंच चुका है। जबकि इस समय बहुत कम मेहनत में बांस और रिंगाल से अच्छी कमाई की जा सकती है। क्योंकि यत्र-तत्र होम स्टे और टूरिस्ट हट बनाए जा रहे हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि आधुनिक पर्यटक इन्हीं में ठहरना पसंद कर रहे हैं। इस बात की बहुत संभावना है कि यह रोजगारसृजन का आधुनिकतम स्रोत बन कर उभर सकता है।

रिंगाल और बांस से स्थानीय पारंपरिक कुटीर उद्योगों धांधों को भी बढ़ावा मिलेगा और स्थानीय उपयोगी उत्पादों का निर्माण भी होगा। इससे भी कमाई के स्रोत पैदा होंगे। अब इस बात पर विचार होना चाहिए कि वन-विभाग वनों के नजदीकी ग्रामपंचायतों को साथ लेकर वन एवं सिविल भूमि में बांस और रिंगाल की खेती को बढ़ावा दे। इससे जहां स्थानीय स्तर पर लोगों को रोजगार मिलेगा वहीं सरकार को भी राजस्व की प्राप्ति होगी।

सरकार को इस ओर वरीयता के साथ धयान देना चाहिए।

शारदा देवी को श्रद्धांजलि

रानीखेत। नगर के प्रतिष्ठित व्यापारी अतुल कुमार, अनूप कुमार सर्राफ की माता शारदा देवी का निधन हो गया। 92 वर्षीय शारदा देवी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। यह परिवार धार्मिक, सामाजिक कार्यों में हमेशा से अग्रणीय रहा है। अतुल अग्रवाल शिव मन्दिर एवं धर्मशाला कमेटी के महासचिव भी हैं।

स्व.शारदा देवी का स्मरण करते हुए सभी ने शोक सम्वेदनाएं प्रकट की हैं। स्व.शारदा देवी के निधन पर पिघलता हिमालय परिवार श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

रंगों का त्यौहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं-

देवेन्द्र सिंह धर्मशक्तू

(सेनि.आरएमओ)
जोहार नगर,
भोटिया पड़ाव,
हल्द्वानी

दिनेश भट्ट

जिलाध्यक्ष उत्तराखण्ड क्रन्ति दल
हल्द्वानी

लिवर केयर सेन्टर

मानस आयरिस डायग्नोस्टिक एण्ड ई.एच. रिसर्च सेन्टर
कमलुवागांज रोड, हल्द्वानी

होटल माँ नन्दादेवी
एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल
एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

सप्ताह के पर्व

फाल्गुन शुक्ल पक्ष
27 फरवरी- होलाष्टक आरम्भ
1 मार्च- दशमी
3 मार्च- आमलकी एकादशी व्रत
6 मार्च- होलिका दहन

Hotel
Bala
Paradise
Tiksain,
Munsiari

Ph. 05961222237,
9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन,
ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग,
स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्सः (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)